भजन

तर्ज– मौज में जब आ गय

मैं खुदी मेरी रहे न,मैं तो धनी जी कुछ नहीं
अव्वल आखिर आप सब,मेरा तो मुझमें कुछ नहीं

1– न इश्क न इलम मुझमें,न ही करती बंदगी
मेहेर तेरी से पाई खिलवत,मैं तो इस काबिल नहीं

2– बल भी तेरा बुध भी तेरी,मैं भी हूं पिया आपकी
जैसे रखो मेरे धनी जी,हमको शिकायत कुछ नहीं

3– दर तेरे पे जो मैं आई,बल दिया ये आपने
हम तो भूले ही पड़े थे,अगर जगाते तुम नहीं

4– राह तेरी पर ही चलते,निकले मेरा दम धनी
तेरी वाणी पे चले,मिट जायें तो गम नहीं